नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तरपुस्तिका की संख्या–

ब$_1$	ब$_2$	ब$_3$	ब$_4$

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)–

विषय– हिन्दी

प्रश्नपत्र संकेतांक– 401 (IZY)

परीक्षा का दिन– मंगलवार

परीक्षा तिथि– 27-02-2024

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या– 01

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम– कु० गरिमा उप्रेती

दिनांक– 27/02/2024

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक– Garima Upreti 27/02/2024

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न-पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या–

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या–

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या–

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक– NC

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक– 23.04.2024

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

योग (शब्दों में)– योग (अंकों में)–

खण्ड अ

उत्तर –: (1) (क)

पद्य ~~काव्य~~ से कविता इस अर्थ में भिन्न है कि कविता छन्दोबद्ध भी हो सकती है और छन्द रहित भी। प्रत्येक पद्य रचना कविता होती है परन्तु प्रत्येक कविता पद्य हो यह आवश्यक नहीं है।

उत्तर –: (1) (ख)

संस्कृत में कुछ विद्वान ध्वनि को, तो कुछ अन्य विद्वान रीति, वक्रोक्ति आदि को काव्य की आत्मा मानते हैं। आचार्य विश्वनाथ रसात्मक वाक्य को काव्य की आत्मा तो पंडितराज जगन्नाथ रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द को काव्य की आत्मा कहते हैं।

उत्तर –: (1) (ग)

कविता के मुख्य गुण निम्न हैं –

(i) कविता सौन्दर्यानुभूति, रसानुभूति अथवा रागात्मकता है।

(ii) कविता का मुख्य गुण उसका राग है।

उत्तर -: (1) (घ)

संस्कृत में कविता को श्रव्य काव्य कहा जाता है।

उत्तर -: (1) (ङ)

काव्य का शरीर उसके "शब्द और अर्थ" को कहा गया है।

उत्तर -: (1) (च)

किसी भी जाति के साहित्य का मुख्य भाग उसका "काव्य साहित्य" ही होता है।

उत्तर -: (1) (छ)

उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक -: साहित्य की शक्ति (भूमिका)

उत्तर -: (3) (ख)

लाइव टेलीकास्ट ।

उत्तर -: (3) (ग)

30 मई ।

उत्तर -: (3) (घ)

अन्य माध्यम ।

उत्तर -: (3) (ङ)

महावीर प्रसाद द्विवेदी

उत्तर -: (4)

"हर घर नल"

श्री दौलतराम शास्त्री जी के कुशल नेतृत्व

हुआ । विगत वर्षों की स्थिति पर नजर दौड़ाएँ तो हम पाते है कि एक कुशल प्रतिनिधि के कारण अलग - अलग योजनाओं के जरिए हमारे गाँव के काफी उन्नति प्राप्त की है।

गाँव में लोगों की जागरूकता के कारण तथा एक कुशल नेतृत्व के कारण गाँव के लोग सरकार द्वारा चालित की गई अनेक योजनाओं का लाभ उठा सके है । उसी योजनाओं के अन्तर्गत आती है हमारी एक यह योजना -

"हर घर नल
हर घर जल"

इस योजना से हमें बहुत लाभ प्राप्त हुआ है। पूर्व के दिनों में हमें पानी की समस्या से बहुत जूझना पड़ा । घंटो - घंटो भर नौले के आस - पास या अन्य जल स्रोतों के आस - पास हमें खड़ा रहना पड़ता था । अपना समय देने के पश्चात् भी हमें जल की पूर्ति नहीं हो पाती थी । लोगों को लड़ाई - झगडे आदि समस्याओं का भी सामना करना पड़ता था परन्तु जब से शास्त्री जी गाँव के प्रधान बने उन्होंने इस समस्या के समाधान

गाँव में होने वाली पेयजल समस्या को सुलझा दिया। 'हर घर नल' लगाकर उन्होंने तो पेयजल की आपूर्ति की ही वरन् उन्होंने यह भी साबित कर दिया कि वे एक कुशल नेतृत्व वाले व्यक्ति है।

हर घर नल के बाद हम अपने समय की भी सम्पूर्ण बचत कर पा रहे है और पानी का उपयोग भी कर लेते है।

उत्तर -:(5) (i) (क)

कवि के जीवन का संसार से कोई नाता नही है। क्योंकि कवि कहता है कि यह संसार अपूर्ण है। इसमें सर्वत्र दुःख ही दुःख या कहें तो समस्याएं ही व्याप्त है। जग में लोग झूठ के आकण्ठ में डूबकर भोग - विलासिता के कार्यों में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते है। लोग अपने जीवन को संसाधनों को जुटाने में इतना व्यस्त है कि वह प्रेम तो मानो भूल ही गए है। कवि झूठ, लोभ के आकण्ठ में डूबे इस दुनिया को धिक्कारता है। क्योंकि उसके लिए यह मोह - माया है। उसको तो सिर्फ अपने प्रियतम को लेना है।

उत्तर -:(5)(i) (ख)

रोदन में राग होने से कवि का आशय है कि वह अपने प्रियतम परमात्मा के विरह में दिन-रात रो रहा है और उनको मिलने में निरंतर प्रत्यनशील है। और इस रोने में भी उसे राग का अनुभव होता है। अर्थात् उसको अब रोने में आनन्द आने लगा है।

शीतल वाणी में आग लिए फिरने से यह आशय है कि भले ही कवि अपने क्रोध और नाराजगी को प्रकट करने के लिए उत्तेजक और अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करते परन्तु अपनी शालीन व मधुर वाणी से वह अपने क्रोध को अवश्य व्यक्त कर देता है। वह चाहे व्यवस्थाओं के प्रति हो या प्रेम में बाधक बने लोगों के मार्ग में।

उत्तर -:(5)(i)(ग)

पद्यांश के रचनाकार -:
श्री "हरिवंशराय बच्चन जी"

उत्तर -: (6)

P.T.O

उक्त काव्यांश "गोस्वामी तुलसीदास" जी द्वारा रचित लक्ष्मण मूर्छा और राम विलाप से लिया गया है। काव्यांश में उस घटना के विषय में बताया गया है कि जब मेघनाथ से युद्ध करते समय लक्ष्मण जी मूर्छित हो जाते हैं या उन्हें शक्ति लग जाती है। तब श्री राम जी के अनुरोध पर हनुमान जी लंका जाते हैं और वहाँ से सुषेण वैद्य को ले आते हैं। और सुषेण वैद्य बताते हैं कि अगर सूर्योदय से पहले संजीवनी बूटी मिल जाएँ तो लक्ष्मण जी पुनः ठीक हो सकते हैं। हनुमान जी संजीवनी बूटी लाने के लिए द्रोणागिरी पर्वत की ओर उड़ान भरते हैं। संजीवनी बूटी की पहचान न होने पर वह सम्पूर्ण पर्वत को उठाकर वापस लंका की ओर आ रहे होते हैं तो रास्ते में अयोध्या के ऊपर भरत जी उन्हें किसी कलिष्ट की आशंका से नीचे धरती में उतार लेते हैं। तब हनुमान जी उन्हें सारा हाल समाचार सुनाते हैं। तो भरत जी उन्हें अपने बाण पर बैठने के लिए कहते हैं जिससे कि वह सूर्योदय से पूर्व ही लंका पहुँच जाएँगे। तो कहा जाता है कि हनुमान जी उस बाण पर सवार हो कर लंका के लिए प्रस्थान करते हैं और भरत जी के पराक्रम की सराहना करते हैं। और सूर्योदय से पूर्व ही लंका पहुँच जाते हैं।

P.T.O

उत्तर -: (प्र) (क)

कैमरे में बन्द अपाहिज कविता के माध्यम से कवि "रघुवीर सहाय" समाज में, लोगों के ऊपर व्यवसायिकता कितनी हावी हो गयी है, के बारे में संदेश देना चाहते हैं। कवि लोगों को संदेश देता है कि हमें अपने आप को समर्थवान देखकर किसी अन्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। या उसका मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। अपाहिज या किसी की अपंगता का उपहास कर उसका बाजारीकरण नहीं करना चाहिए।

उत्तर -: (प्र) (ग)

बात और भाषा में सीधा संबंध पाया जाता है। मनुष्य अपने विचारों, मनोभावों को व्यक्त करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है वह भाषा कहलाती है। बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं। बात को व्यक्त करने के लिए अगर हम सही शब्दों को इस्तेमाल नहीं करते तो वह व्यर्थ में ही घूमती रहती है। या उसमें कसावट नहीं बन पाती। भाषा के चक्कर में कभी-कभी बात सीधी बात भी टेड़ी हो जाती है और

अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

उत्तर -: (8) (i) (क)

लेखक ने शिरीष तरु को "अवधूत" की संज्ञा प्रदान की है। यह उचित है क्योंकि जिस तरह एक अवधूत (सन्यासी) सांसारिक विषयाभोगों से ऊपर उठकर जीवन यापन करता है या सांसारिक कामनाओं से ऊपर उठ जाता है ठीक उसी प्रकार शिरीष भी विषय वासनाओं से ऊपर उठा हुआ प्रतीत होता है। उसमें काल का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसे लेखक ने इसी लिए कालजयी अवधूत की संज्ञा भी दी है।

उत्तर -: (8)(i)(ख)

शिरीष की विशेषता यह है कि उस पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह भयंकर गर्मी में भी खिलता है। और बसन्त के आगमन पर लहक उठता है। और आषाढ़ - भादो तक खिलता रहता है। जब भयंकर गर्मी से प्राण उबल रहे होते हैं, लू से हृदय सूख रहा होता है तब शिरीष ही कालजयी अवधूत की तरह खड़ा रहता है।

उत्तर -: (8)(i)(ग)

गद्यांश के लेखक -: हजारी प्रसाद द्विवेदी जी।

पाठ का नाम -: शिरीष के फूल।

उत्तर -: (9) (क)

भक्तिन पाठ में लेखिका महादेवी वर्मा बताती है कि आज मैं और अधिक देहाती हो गई। क्योंकि भक्तिन ने मुझे सीखा दिया कि- रात का बना मकई का दलिया सबेरे मट्ठा में सौंधा लगता है। बाजरे के तिल लगाकर बनाए गए पुए गरम कम अच्छे लगते हैं। ~~साबु~~ मक्के के दोनों की खिचड़ी स्वादिष्ट होती है और सफेद महुए की लपसी संसार भर के हलुए को लजा सकती है।

उत्तर -: (9) (ग)

भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का बहुत महत्व है। यहाँ नदियों को (मोक्षदायिनी)

यानि मोक्ष प्रदान करने वाली माना जाता है। भारत में नदियों को देवस्वरूपा कहा जाता है। यहाँ नदियों को माता (माँ) की उपाधि दी गई है। नदियों के किनारे अनेक धार्मिक स्थल बसे हुए हैं। गंगा नदी को अधिक सांस्कृति व सामूहिक या सामाजिक महत्व दिया जाता है। इसलिए काले 'मेघा पानी दे' पाठ में बच्चों की टोली सर्वप्रथम "गंगा मैया की जय" बोलते हैं।

उत्तर -: (10) (ख)

सिल्वर वैडिंग कहानी दो पीढ़ियों के मध्य द्वन्द की कहानी है। जिसमें कथानायक यशोधर बाबू पुरानी रीति-रीवाज, धर्म-कर्म व पुरातन व्यवस्थाओं में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं। वहीं दूसरी तरफ उनकी परिवार आधुनिकता का चोला ओढ़े है। इस कहानी से आधुनिक समय में दो पीढ़ियों के बीच के (गैप) या अन्तराल को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

उत्तर -: (10) (ग)

P.T.O

चलता है कि यह सभ्यता साधन सम्पन्न थी। चौपड की गोटियाँ, मनके वाले हार, चौक के बने मृदुभाण्ड, कंघी, बडे - बडे शीशे चौड़ी सड़के, भण्डारघर, अनायबघर यहाँ की सम्पन्नता की सूचक है। पर यह सभ्यता आडम्बर विहीन है। इसमें न ही मन्दिर मिले या कोई धार्मिक स्थल। न ही राजाओं या सामन्तों, महान्तों की उपाधियाँ मिली। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता साधन सम्पन्न तो थी परन्तु आडम्बर विहीन थी।

उत्तर -: (10) (घ)

जूझ कहानी में लेखक "आनन्द यादव" के मन में ~~कव~~ स्वयं कविता रच लेने का विश्वास उसके मराठी भाषा के अध्यापक न० वा० सौन्दलगेकर जी से प्राप्त हुई। अध्यापक द्वारा रचित मालती की लतावली की कविता से लेखक को प्रेरणा प्राप्त हुई। उसने जाना कि कविता का रस उसके चारों ओर के वातावरण में ही उपस्थित है और अगर आवश्यकता है कि उसे ढूंढने की।

P.T.O

उत्तर -: (11)

जूझ निम्न मध्यम वर्गीय किसान - मजदूरों की संघर्ष की अनूठी झाँकी है। अधिकतर देखा जाता है कि निम्न मध्यवर्गीय लोगों को इन समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ता है। उनको तो अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना ही बहुत कठिन होता है। उनका प्रथम कार्य या पहली रुचि भोजन, वस्त्र, घर व अन्य आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करना है। फिर कहीं जाकर पढ़ाई की बात आती है। ऐसा ही आनन्दा के साथ भी है। वह घर से निर्धन, गरीब होने के कारण अपनी पढ़ाई नहीं कर पाते। अपने माँ और दादा के साथ खेतों में कार्य करते हैं। परन्तु वह पढ़ाई के प्रति जुझारू प्रवृत्ति होने के कारण जीवन संघर्षों में अपनी राह बना लेते हैं, और एक दिन बहुत बड़े लेखक बन जाते हैं।

4

खण्ड — 'ब'

उत्तर -: (12) (क)

पण्डितगोविन्दवल्लभ पन्तस्य उच्चशिक्षा प्रयागनगरे सम्पन्ना अभवत्।

उत्तर-ः (12) (ख)

प्रयागनगरे सः श्रेष्ठराजनीतिज्ञानां सम्पर्के आगच्छत् ।

उत्तर-ः (12) (घ)

विधि शिक्षायाः अध्ययनान्ते सः अधिवक्तृरूपेण जीविकोपार्जनं आरब्धवान् ।

उत्तर-ः (13) (ख)

अम्बोदाः गगने सन्ति ।

उत्तर-ः (13) (ग)

केचित् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वृथा गर्जन्ति ।

उत्तर-ः (13) (घ)

अम्बोदाः वृष्टिभिरार्द्रयन्ति कुर्वन्ति ।

उत्तर-ः (14) (क)

मधुप्रियः लोकाड्ये अस्ति ।

P.T.O

उत्तर -: (14) (ग)

वार्षिकोत्सवे सांस्कृतिक कार्यक्रम: — गीतं, नृत्यम्, नाटकं, भाषणम् च भविष्यन्ति ।

उत्तर -: (14) (घ)

वल्ली वृक्षं वेष्टयते । —

उत्तर -: (14) (च)

गान्धारी दुर्योधनस्य माता आसीत् ।

उत्तर -: (15)

गीतम् — बालका: गीतम् गायन्ति ।
न्यायालयः — बालक: न्यायालय: गच्छति ।
गर्जन्ति — गगने अम्भोदा: गर्जन्ति ।

उत्तर -: (16) (क)

करण कारक ।

P.T.O

उत्तर -: (16) (ख)

अव्ययी भाव ।

उत्तर -: (16) (ग)

लभामहे ।

उत्तर -: (16) (घ)

जगति ।

उत्तर -: (16) (ङ)

रामस् + चलति

उत्तर -: (16) (च)

कोऽपि ।

उत्तर -: (17)

श्लोक -:
हे जिह्वे कटुस्नेहे मधुरं किं न भाषसे।
मधुर वदं कल्याणि लोकोऽयं मधुराप्रिय: ।।

P.T.O

अनुवाद –ः है। कटुता को चाहने वाली जीभ, तू मधुर क्यों नहीं बोलती। तुझ तेरे द्वारा तो मधुर वचन कहे जाने चाहिए। क्योंकि तू जानती है यह संसार मधुरता को प्रेम करता है।

उत्तर –ः (2)

"राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका"

प्रस्तावना –ः युवा किसी देश की रीढ़ की हड्डी होते है। जिस प्रकार शरीर के सही ढंग से कार्यान्वय के लिए रीढ़ की हड्डी कार्य करती है ठीक उसी प्रकार एक देश के सम्पूर्ण व समुचित विकास के लिए युवाओं द्वारा किए गए कार्य उत्तरदायी होते है। देश की शक्ति के रूप में युवाओं को जाना जाता है। एक राष्ट्र की पहचान ही वहाँ के नागरिकों के द्वारा होती है।

राष्ट्र निर्माण –ः किसी राष्ट्र का निर्माण पत्थर,

मिलकर बनता है। या हम इसी तरह किसी राष्ट्र का निर्माण की कल्पना करते हैं। परन्तु एक राष्ट्र का बाहरी स्वरूप ही नहीं बल्कि उसे उसका आंतरिक स्वरूप भी दर्शाता है। राष्ट्र की शक्ति या निर्माता वहाँ के नागरिक हैं जो राष्ट्र को आंतरिक स्वरूप प्रदान करते हैं।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की बहुत भूमिका है। एक राष्ट्र के समुचित विकास के लिए युवाओं की शक्ति का विशेष महत्व है। युवाओं का शिक्षित होना, शिष्टाचार, उत्तम व्यवहार, अच्छे संस्कारों का होना एक राष्ट्र के विकास के लिए बहुत आवश्यक है। युवाओं को अगाध से अथाह शक्ति का भंडार भी कहा जाता है। युवा जोश, फुर्ती से भरे होते हैं। वह चाहे तो एक देश को खाक से उठाकर आकाश तक पहुँचा सकते हैं। यह उनकी आत्म निर्णय की शक्ति है। युवाओं के अपने शक्ति का प्रदर्शन दो तरीके

(1) विनाश में
(2) निर्माण में ।

अगर देश की युवा शक्ति का प्रयोग देश के निर्माण में किया जाए तो देश उत्तम स्थिति प्राप्त कर सकता है। इस स्थिति को हम भारत के संदर्भ में देख सकते हैं। भारत बहुत बड़ी आबादी को अपने में समाया हुआ राष्ट्र है। जो राष्ट्र की कमजोरी नहीं वरन् शक्ति है। परन्तु इस शक्ति को एक सही दिशा निर्देश में लगाना भी आवश्यक है। जिस प्रकार एक शिष्य के चरित्र के निर्माण में गुरु का विशेष स्थान है उसी प्रकार एक राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का।

अगर हमने युवाओं को शक्ति प्रदर्शन के सही मार्ग में नहीं लगाया तो वह अवनति के मार्ग की ओर चल पड़ेंगे। जिस प्रकार बिना लक्ष्य वाला व्यक्ति रास्तों में भटकता रहता है। ठीक उसी प्रकार युवाओं का भी प्रदर्शन भी जरूरी है। माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना —

" युवा भारत
अखंड भारत "

इस प्रकार राष्ट्र के युवा अनेक चीजों में अपना योगदान दे सकते है —

(1) शिक्षा के क्षेत्र में।
(2) स्वास्थ्य के क्षेत्र में।
(3) तकनीक, अनुसंधान, भूगोल के क्षेत्र में। नये - नये उपकरणों, वैज्ञानिक यंत्रों को खोजकर, बिमारियों के लिए नए अनुसंधान व नई-नई दवाईयों का प्रयोग कर या बना कर, अंतरिक्ष के क्षेत्र में नई - नई खोज कर।

उपसंहार -: इस प्रकार एक राष्ट्र के निर्माण में छात्र कहे या कहे युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। और युवाओं को अपनी इस भूमिका को समझते हुए अखंड भारत के निर्माण में अपना योगदान देना है। क्योंकि इतिहास साक्षी है कि जब - जब राष्ट्र के युवाओं ने हुंकार भरी है तब तब राष्ट्र उन्नति के शिखर को छूते चला है।

Roll No: — 24360285

दो करोड़ चौंतालीस लाख साठ हजार दो सौ पिचासी।